📘 अध्याय 5

🌾 1000 kg गेहूँ के भूसे से बटन मशरूम कम्पोस्ट (Long Method)

🟢 5.1 कम्पोस्ट क्या है?

कम्पोस्ट वह विशेष जैविक माध्यम (Growing Medium) है जिसमें बटन मशरूम (Button Mushroom) का माइसीलियम (Mycelium) बढ़ता है।

अच्छी गुणवत्ता का कम्पोस्ट सफल उत्पादन की सबसे महत्वपूर्ण नींव है।

🎯 यदि कम्पोस्ट सही बना है, तो:

* ✅ माइसीलियम तेजी से फैलता है।
* ✅ रोगों का खतरा कम रहता है।
* ✅ उत्पादन (Yield) अच्छा मिलता है।
* ✅ मशरूम का आकार और गुणवत्ता बेहतर होती है।

🟢 5.2 कम्पोस्ट बनाने के लिए आवश्यक कच्चा माल

ARK MUSHROOMS PLANT
6200943751
ASHISH RAJ
GAYA, BIHAR

सामग्री	अनुमानित मात्रा
🌾 गेहूँ का सूखा भूसा	1000 kg
🐔 सूखी मुर्गी की खाद	700–900 kg
🌾 गेहूँ का चोकर	50–100 kg
⚪ जिप्सम	30–50 kg
⚪ यूरिया (यदि उपयोग करें)	8–15 kg
💧 स्वच्छ पानी	आवश्यकता अनुसार

💡 सामग्री की गुणवत्ता

🌾 भूसा

* सुनहरा रंग हो।
* फफूंदी न लगी हो।
* बारिश में भीगा हुआ न हो।

🐔 मुर्गी की खाद

* अच्छी तरह सूखी हो।
* प्लास्टिक, पत्थर या अन्य कचरा न मिला हो।

ARK MUSHROOMS PLANT
6200943751
ASHISH RAJ
GAYA, BIHAR

💧 पानी

* साफ एवं ताजा हो।

* खारा या गंदा पानी उपयोग न करें।

🟢 5.3 आवश्यक उपकरण

🧰 कम्पोस्ट बनाने के लिए निम्न उपकरण उपयोगी हैं:

* 🚿 पानी का पाइप

* 🛠️ फावड़ा

* 🚜 ट्रॉली

* 🌡️ कम्पोस्ट थर्मामीटर

* ⚙️ कम्पोस्ट टर्नर (यदि उपलब्ध हो)

* 🟦 तिरपाल

* 🧤 रबर के दस्ताने

* 😷 मास्क

* 👢 सुरक्षा जूते

🟢 5.4 कम्पोस्ट बनाने का स्थान

ARK MUSHROOMS PLANT
ASHISH RAJ
GAYA, BIHAR

अच्छी कम्पोस्टिंग के लिए सही स्थान चुनना बहुत जरूरी है।

✅ जमीन समतल हो।

✅ पानी जमा न हो।

✅ हवा का अच्छा आवागमन हो।

✅ पशुओं की पहुँच न हो।

✅ कार्यस्थल साफ-सुथरा हो।

🟢 5.5 भूसे को भिगोना

💧 सबसे पहले भूसे को अच्छी तरह फैलाएँ।

24–48 घंटे तक पानी दें ताकि प्रत्येक तिनका समान रूप से भीग जाए।

✔️ सही नमी की पहचान

🤲 हाथ में भूसा दबाने पर:

✅ नमी महसूस हो।

✅ लेकिन पानी टपके नहीं।

इसे ही उचित नमी माना जाता है।

🟢 5.6 Pile (ढेर) बनाना

ARK MUSHROOMS PLANT
6200943751
ASHISH RAJ
GAYA, BIHAR

अब भीगे हुए भूसे और मुर्गी की खाद की परतें बनाकर लंबा ढेर तैयार करें।

📏 सामान्य आकार

* ऊँचाई - लगभग 5–6 फीट

* चौड़ाई - लगभग 5–6 फीट

* लंबाई - आवश्यकता अनुसार

ढेर इतना बड़ा होना चाहिए कि उसके अंदर जैविक गर्मी (Fermentation Heat) बन सके।

🟢 5.7 कम्पोस्ट में गर्मी क्यों बनती है?

🧫 कम्पोस्ट में मौजूद लाभकारी सूक्ष्मजीव भूसे और खाद को तोड़ना शुरू करते हैं।

इस प्रक्रिया से प्राकृतिक गर्मी उत्पन्न होती है।

यह कम्पोस्टिंग की सामान्य प्रक्रिया है।

🟢 5.8 टर्निंग (Turning)

🔄 कम्पोस्ट को समय-समय पर पलटना बहुत जरूरी होता है।

इसके फायदे

ARK MUSHROOMS PLANT 6200943751 ASHISH RAJ GAYA, BIHAR

✅ ऑक्सीजन मिलती है।

✅ सभी भाग समान रूप से सड़ते हैं।

✅ अतिरिक्त गर्मी नियंत्रित रहती है।

✅ नमी समान रहती है।

📅 सामान्य टर्निंग कार्यक्रम

📅 दिन	📝 कार्य
Day 0	🌾 भूसा भिगोना एवं ढेर बनाना
Day 4	🔄 पहली टर्निंग
Day 8	🔄 दूसरी टर्निंग
Day 12	❓ तीसरी टर्निंग एवं जिप्सम मिलाना
Day 16	🔄 चौथी टर्निंग
Day 20	🔄 पाँचवीं टर्निंग
Day 24–26	✅ कम्पोस्ट की गुणवत्ता की जाँच

ARK MUSHROOMS PLANT
6200943751
ASHISH RAJ
GAYA, BIHAR

🟢 5.9 अच्छा कम्पोस्ट कैसे पहचानें?

यदि कम्पोस्ट में ये लक्षण हैं तो वह अच्छा माना जाता है।

✅ गहरा भूरा रंग

✅ हल्की मिट्टी जैसी सुगंध

✅ अमोनिया की तेज गंध न हो

✅ भूसा नरम हो

✅ हाथ में दबाने पर नमी महसूस हो

✅ पानी न टपके

🟢 5.10 सामान्य गलतियाँ

❌ भूसा कम भिगोना

❌ जरूरत से ज्यादा पानी देना

❌ समय पर टर्निंग न करना

❌ संक्रमित सामग्री उपयोग करना

❌ तापमान की अनदेखी

❌ नमी की जाँच न करना

🟢 5.11 Phase-II का महत्व

Phase-I पूरा होने के बाद कम्पोस्ट को सीधे उपयोग नहीं किया जाता।

ARK MUSHROOMS PLANT
6200943751
ASHISH RAJ
GAYA, BIHAR

इसके बाद Phase-II में:

🔥 Pasteurization

🌡️ Conditioning

की प्रक्रिया की जाती है।

इससे

✅ अमोनिया कम होती है।

✅ हानिकारक कीट नियंत्रित होते हैं।

✅ कम्पोस्ट स्पॉनिंग के लिए तैयार होता है।

📌 अध्याय 5 का सार

🌾 अच्छी कम्पोस्ट की शुरुआत सही सामग्री, उचित नमी, नियमित टर्निंग, स्वच्छता और सही प्रबंधन से होती है। जितनी बेहतर कम्पोस्ट होगी, उतनी ही अच्छी माइसीलियम वृद्धि और उत्पादन मिलने की संभावना होगी।

ARK MUSHROOM PLANT
6200943751
ASHISH RAJ
GAYA, BIHAR

ARK
MUSHROOMS PLANT
6200943751
ASHISH RAJ
GAYA, BIHAR